ITA-ATE MUSTAFA (HINDI BAYAAN)

इताअ़ते मुस्त़फ़ा

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : **"مَنْ صَلّٰی عَلَیَّ فِیْ یَوْمٍ اَلْفَ مَرَّۃٍ لَمْ یَمُتْ حَتّٰی یَرٰی مَقْعَدَہٗ مِنَ الْجَنَّۃِ"** या'नी जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा, वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा, जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले ।

(الترغیب والترھیب، کتاب الذکر والدعاء، الترغیب فی اکثار الصلاۃ علی النبی، ۲/ ۳۲۶، حدیث: ۲۵۹۰)

वोह तो निहायत सस्ता सौदा बेच रहे हैं जन्नत का
हम मुफ़्लिस क्या मोल चुकाएं अपना हाथ ही ख़ाली है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स.186)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ात़िर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं **:**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** "نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرَانِی ج۶ ص۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :–

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता ।
(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

बयान सुनने की नियतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की नियतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नहूल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً ''पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो'' में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा, बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सोने की अंगूठी न उठाई

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स के हाथ में सोने की अंगूठी देखी। आप ने उस के हाथ से निकाल कर फेंक दी और फ़रमाया : "क्या तुम में से कोई येह चाहता है कि आग का अंगारा अपने हाथ में रखे ?" जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए, तो लोगों ने उस शख़्स से कहा : तुम अपनी अंगूठी उठा लो और इसे (बेच कर) इस से फ़ाइदा उठाओ। उस ने जवाब दिया : नहीं ! जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे फेंक दिया है, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इसे कभी नहीं उठाऊंगा।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب اللباس، باب الخاتم، الحدیث:۴۳۸۵، ج۲، ص۱۲۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कैसे मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार थे कि अगर वोह सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ चाहते तो अंगूठी उठा कर अपने इस्ति'माल में ला सकते थे, मगर इत़ाअ़ते रसूल के कामिल जज़्बे ने येह गवारा न किया कि जिस चीज़ को रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ना पसन्द फ़रमा कर दूर फेंक दिया, उसे दोबारा हाथ लगाएं। यक़ीनन हर मुसलमान को सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की त़रह़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इत़ाअ़त गुज़ार होना चाहिये, जिन चीज़ों से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमा दिया, उन से बचते रहें और जिन का हुक्म इरशाद फ़रमाया है, हमेशा उन की पाबन्दी करते रहें, क्यूंकि मुसलमानों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त वाजिब है, चुनान्चे, पारह 9 सूरतुल अन्फ़ाल आयत नम्बर 1 फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَاَطِیۡعُوا اللّٰہَ وَرَسُوۡلَہٗۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِیۡنَ ﴿۱﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और* ***अल्लाह*** *व रसूल का हुक्म मानो अगर ईमान रखते हो।*

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त में फ़र्क़ येह है कि रब तआ़ला की इत़ाअ़त सिर्फ़ उस के दिये गए हुक्म में होगी, उस के कामों में इत़ाअ़त नहीं हो सकती, लेकिन हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की इत़ाअ़त तीन चीज़ों में की जाएगी । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के किये गए कामों में, बयान कर्दा फ़रामीन में और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने जो काम हुवा और हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने मन्अ़ न फ़रमाया, उस में भी इत़ाअ़त होगी । या'नी मुस्त़फ़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो फ़रमा दिया, उस को मानो, हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने जो कुछ ख़ुद कर के दिखाया उसे भी मानो ! और जो किसी को करते हुवे देख कर मन्अ़ न फ़रमाया उसे मानो ! मज़ीद फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त का हुक्म फ़रमाने से येह न समझा जाए कि अगर हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की इत़ाअ़त न की गई तो उन का कुछ नुक़्सान होगा, वोह तो अपना फ़र्ज़े तब्लीग़ अदा फ़रमा चुके, अब न मानने और इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा न करने का वबाल तुम पर है ।

(शाने ह़बीबुर्रह़मान, स. 66 मुलख़्ख़सन मुलतक़त़न)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सानों को ज़िन्दगी गुज़ारने और दुन्या व आख़िरत की कामयाबी पाने के लिये अपनी और अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी का हुक्म दिया है और साथ ही येह इख़्तियार भी दिया है कि अह़कामे इलाही पर अ़मल करते हुवे उस के मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार बन्दे बन कर चाहें तो जन्नत की अबदी ने'मतों से लुत़्फ़ उठाएं या उस की ना फ़रमानी के मुर्तकिब हो कर जहन्नम के ह़क़दार ठहरें । लिहाज़ा दुन्या व आख़िरत में सुर्ख़रू (या'नी कामयाब) होने के लिये सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पाकीज़ा किरदार को अपनाने ही में आ़फ़िय्यत है क्यूंकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी हमारे लिये बेहतरीन नमूनए अ़मल है ।

चुनान्चे, पारह 21, सूरतुल अह़ज़ाब आयत 21 में इरशाद होता है :

www.dawateislami.net

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है।*

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तफ़्सीरे ''नूरुल इरफ़ान'' में इसी आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ज़िन्दगी शरीफ़ सारे इन्सानों के लिये नमूना है, जिस में ज़िन्दगी का कोई शो'बा बाक़ी नहीं रहता और येह भी मत़लब हो सकता है कि रब (तआ़ला) ने हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ज़िन्दगी शरीफ़ को अपनी कुदरत का नमूना बनाया। कारीगर नमूना पर अपना सारा ज़ोरे सनअ़त सर्फ़ कर देता है। मा'लूम हुवा कि कामयाब ज़िन्दगी वोही है जो उन के नक़्शे क़दम पर हो, अगर हमारा जीना, मरना, सोना, जागना हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के नक़्शे क़दम पर हो जाए तो येह सारे काम इ़बादत बन जाएं। (نور العرفان، پ٢١، الاحزاب، تحت الآية: ٢١، ص١٧١)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते मुबारका हमारे लिये मश्अ़ले राह है, लिहाज़ा मुसलमान और सच्चे ग़ुलाम होने के नाते़ हम पर लाज़िम येह है कि तमाम मुआ़मलात में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त व पैरवी करें और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर मज़बूती़ से अ़मल करते हुवे ज़िन्दगी बसर करें कि येही हमारी नजात का ज़रीआ़ है। इस ज़िम्न में दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा समाअ़त फ़रमाइये :

1) مَنْ اَطَاعَنِيْ دَخَلَ الْجَنَّةَ وَ مَنْ عَصَانِيْ فَقَدْ اَبٰى या'नी जिस ने मेरा हुक्म माना, वोह जन्नत में दाख़िल हो गया और जिस ने मेरी ना फ़रमानी की वोह इन्कार करने वाला हो गया। (بخاری، ٤/٤٩٩، حدیث: ٧٢٨٠)

2) तुम में से कोई उस वक़्त तक (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता, जब तक कि उस की ख़्वाहिश मेरे लाए हुवे के ताबेअ़ न हो जाए।

(مشكاة المصابيح، كتاب الايمان، باب الاعتصام...الخ، ج١، ص٥٤، الحديث: ١٦٧)

www.dawateislami.net

लिहाज़ा हमें चाहिये कि अपने प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अक़्वाल, अफ़्आ़ल, अख़्लाक़ो आ़दात का बग़ौर मुत़ालआ़ कर के अपनी ज़िन्दगी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करते हुवे गुज़ारें । मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इत़ाअ़ते ख़ुदा और इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा की अहमिय्यत बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : इन्सान को क़ुदरत ने दो क़िस्म के आ'ज़ा दिये हैं, एक ज़ाहिरी, दूसरे छुपे हुवे । ज़ाहिरी उ़ज़्व तो सूरत चेहरा, आंख, नाक, कान वग़ैरा हैं और छुपे हुवे उ़ज़्व दिल, दिमाग़, जिगर वग़ैरा हैं । मुसलमान कामिल ईमान वाला जब हो सकता है कि सूरत में भी मुसलमान हो और दिल से भी या'नी इस्लाम का उस पर ऐसा रंग चढ़े कि सूरत और सीरत दोनों को रंग दे, दिल में **अल्लाह** तआ़ला और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त का जज़्बा मोजें मार रहा हो, उस में ईमान की शम्अ़ जल रही हो और सूरत ऐसी हो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पसन्द थी या'नी मुसलमान की सी हो । अगर दिल में ईमान है मगर सूरत ग़ैर मुस्लिम की सी तो समझ लो कि इस्लाम में पूरे दाख़िल न हुवे, सीरत भी अच्छी बनाओ और सूरत भी ।

इस्लामी शक्ल और इस्लामी लिबास में इतने फ़ाइदे हैं (1) गवर्मेन्ट ने हज़ारों मेह़कमे बना दिये हैं, रेलवे, डाकख़ाना, पोलिस, फ़ोज और कचेह़री वग़ैरा और हर मेह़कमे के लिये वर्दी अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा मुक़र्रर कर दी कि अगर लाखों आदमियों में किसी मेह़कमे का आदमी खड़ा हो तो साफ़ पहचान में आ जाता है, अगर कोई सरकारी नोकर अपनी ड्यूटी के वक़्त अपनी वर्दी में न हो तो उस पर जुर्माना होता है, अगर बार बार कहने पर न माने तो फ़ारिग़ कर दिया जाता है, इसी त़रह़ हम भी मेह़कमए इस्लाम और सल्त़नते मुस्त़फ़वी और हुकूमते इलाहिय्या के नोकर हैं, हमारे लिये अ़लाह़िदा शक्ल मुक़र्रर कर दी कि अगर लाखों काफ़िरों के बीच में खड़े हों तो पहचान लिये जाएं कि मुस्त़फ़ा عَلَیْہِ السَّلَام का ग़ुलाम वोह खड़ा है, अगर हम ने अपनी वर्दी छोड़ दी तो

हम भी सज़ा के मुस्तह़िक़ होंगे। (2) क़ुदरत ने इन्सान की ज़ाहिरी सूरत और दिल में ऐसा रिश्ता रखा है कि हर एक का दूसरे पर असर पड़ता है, अगर आप का दिल ग़मगीन है तो चेहरे पर उदासी छा जाती है और देखने वाला कह देता है कि ख़ैर तो है चेहरा क्यूं उदास है ? दिल में ख़ुशी है तो चेहरा भी सुर्ख़ व सपेद (या'नी सफ़ेद) हो जाता है, मा'लूम हुवा कि दिल का असर चेहरे पर होता है, इसी त़रह़ अगर किसी को दिक़ (या'नी टी-बी) की बीमारी है तो ह़कीम कहते हैं कि इस को अच्छी हवा में रखो अच्छे और साफ़ कपड़े पहनाओ, इस को फ़ुलां दवा के पानी से ग़ुस्ल दो, कहिये बीमारी तो दिल में है येह ज़ाहिरी जिस्म का इलाज क्यूं हो रहा है, इसी लिये कि अगर ज़ाहिर अच्छा होगा तो अन्दर भी अच्छा हो जाएगा। तन्दुरुस्त आदमी को चाहिये कि रोज़ाना ग़ुस्ल करे, साफ़ कपड़े पहने, साफ़ घर में रहे तो तन्दुरुस्त रहेगा। इसी त़रह़ ग़िज़ा का असर भी दिल पर पड़ता है। ग़रज़ कि मानना पड़ेगा कि ग़िज़ा और लिबास का असर दिल पर होता है, तो अगर काफ़िरों की त़रह़ लिबास पहना गया या कुफ़्फ़ार की सी सूरत बनाई गई तो यक़ीनन दिल में काफ़िरों से मह़ब्बत और मुसलमानों से नफ़रत पैदा हो जावेगी, ग़रज़ येह कि येह बीमारी आख़िर में मोहलिक (या'नी हलाक कर देने वाली) साबित होगी, इस लिये ह़दीसे पाक में आया है "مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ" जो किसी दूसरी क़ौम से मुशाबहत पैदा करे, वोह उन में से है। (المعجم الاوسط، الحدیث ۸۳۲۷، ج۶، ص۱۵۱)

ख़ुलासा येह कि मुसलमानों की सी सूरत बनाओ ताकि मुसलमानों ही की त़रह़ सीरत पैदा हो। (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 84 मुलतक़त़न)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा करते हुवे अपने ज़ाहिरो बात़िन को इस्लाम के मुत़ाबिक़ करने में फ़ाइदा ही फ़ाइदा है। हमें भी चाहिये कि अपने प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अक़्वाल, अफ़्आ़ल, ह़ालात का बग़ौर मुत़ालआ़ कर के अपनी ज़िन्दगी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करते हुवे गुज़ारें, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

की हर हर सुन्नत पर अ़मल की कोशिश किया करते थे, बल्कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिस बात का हुक्म न भी दिया होता, उस में भी पैरवी करते थे। चुनान्चे,

बात करते वक़्त मुस्कुराया करते

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब भी बात करते तो मुस्कुराते। मैं ने अ़र्ज़ की : आप (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) इस आ़दत को तर्क फ़रमा दीजिये, वरना लोग आप को अह़मक़ समझने लगेंगे। तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं ने जब भी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बात करते देखा या सुना, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुराते थे।" (लिहाज़ा मैं भी इसी सुन्नत पर अ़मल की निय्यत से ऐसा करता हूं)।

(مسند احمد، مسند الانصار، باقی حدیث ابی الدرداء رضی اللہ تعالی عنہ، ۸/۱۷۱، حدیث: ۲۱۷۹۱)

पतली पतली गुले क़ुद्स की पत्तियां
उन लबों की नज़ाक़त पे लाखों सलाम
जिस की तस्कीं से रोते हुवे हंस पड़े
उस तबस्सुम की आ़दत पे लाखों सलाम

सरकार की पसन्द अपनी पसन्द

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि एक दरज़ी ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दा'वत की, (ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं :) आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मैं भी दा'वत में शरीक हो गया, दरज़ी ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सामने रोटी, कद्दू (लौकी शरीफ़) और गोश्त का सालन रखा। मैं ने देखा नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बरतन से कद्दू शरीफ़ तलाश कर के तनावुल फ़रमा रहे हैं (इस के बा'द आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपना अ़मल बताते हुवे फ़रमाते हैं) فَلَمْ اَزَلْ اُحِبُّ الدُّبَّاءَ مِنْ يَوْمِئِذٍ या'नी उस दिन के बा'द से मैं कद्दू शरीफ़ को पसन्द करता हूं। (بخاری، کتاب البیوع، باب ذکر الخیاط، ۲/۱۷، حدیث: ۲۰۹۲)

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी का कैसा जज़्बा था कि जिस काम का हुक्म भी इरशाद नहीं फ़रमाया, फिर भी येह लोग आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर अदा अपनाने का शौक़ रखते हैं, फिर सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस चीज़ का हुक्म फ़रमाया करते, तो उस में इत़ाअ़त का क्या आ़लम होगा !

आइये ! इस ज़िम्न में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की इत़ाअ़ते रसूल से मुतअ़ल्लिक़ प्यारे प्यारे चन्द वाक़िआ़त सुनते हैं ।

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का फ़रमाने रसूल पर अ़मल

एक बार उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास एक साइल आया, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उसे रोटी का एक टुकड़ा अ़त़ा फ़रमा दिया, फिर एक ख़ुश लिबास शख़्स आया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उसे बिठा कर खाना खिलाया । लोगों ने इस फ़र्क़ की वज्ह पूछी तो आप ने इरशाद फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है ''اَنْزِلُوا النَّاسَ مَنَازِلَهُمْ'' या'नी हर शख़्स से उस के दरजे के मुत़ाबिक़ बरताव करो ।

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی تنزیل الناس منازلھم، الحدیث: ۴۸۴۲، ج۴، ص۳۴۳)

मेहमान नवाज़ी की अक़्साम और इन के तक़ाज़े

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के अ़मल से मा'लूम हुवा कि लोगों के मक़ाम व मर्तबे का लिह़ाज़ करते हुवे उन की मेहमान नवाज़ी, ख़ात़िर तवाज़ोअ़ और ता'ज़ीमो तौक़ीर करनी चाहिये । हर मेहमान के साथ उस की ह़ैसिय्यत के मुत़ाबिक़ सुलूक करना चाहिये, मेहमानों में कुछ तो वोह होते हैं जो घन्टे दो घन्टे के लिये आते हैं और चाए, पानी पीने के बा'द चले जाते हैं और बा'ज़ के लिये खाने पीने का ख़ास एहतिमाम ज़रूरी होता है, बा'ज़ वोह होते हैं जिन्हें हम शादी बियाह, अ़क़ीक़े वग़ैरा किसी तक़रीब में दा'वत दे कर ख़ुद बुलाते हैं, इस में अमीरो ग़रीब का इम्तियाज़ किये बिग़ैर खिलाने पिलाने और बिठाने में

www.dawateislami.net

सब के लिये यक्सां एहतिमाम करना चाहिये, ऐसा न हो कि अमीरो कबीर लोग तो शाहाना अन्दाज़ में बैठे ख़ूब अन्वाओ अक़्साम के उ़म्दा खानों से लुत़्फ़ उठाएं, मगर मुफ़्लिसो मुतवस्सित़ लोगों को आ़म खाने खिलाए जाएं, ऐसा हरगिज़ नहीं करना चाहिये कि इस से मुसलमानों की दिल शिकनी होती है। ह़दीसे पाक में है : बुरा खाना उस वलीमे का खाना है, जिस में मालदार लोग बुलाए जाते हैं और फ़ुक़रा छोड़ दिये जाते हैं।

(صحیح البخاري، کتاب النکاح، باب من ترک الدعوة...إلخ، الحدیث: ۵۱۷۷، ج۳، ص۴۵۵)

बा'ज़ मेहमान बहन, भाई या क़रीबी रिश्तेदार होते हैं, जो कुछ दिनों के लिये रहने आते हैं, उन की मेहमान नवाज़ी भी करनी चाहिये।

ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है, वोह मेहमान का इकराम करे, एक दिन रात उस का जाइज़ा है (या'नी एक दिन उस की पूरी ख़ात़िर दारी करे, ह़स्बे इस्तित़ाअ़त उस के लिये पुर तकल्लुफ़ खाना तय्यार करवाए) और ज़ियाफ़त 3 दिन है (या'नी एक दिन के बा'द मा ह़ज़र (जो घर में मौजूद हो) पेश करे) और 3 दिन के बा'द सदक़ा है। (صحیح البخاری"، کتاب الأدب، باب إکرام الضیف...إلخ، الحدیث: ۶۱۳۵، ج۴، ص۱۳۶)

लोगों के मक़ामो मर्तबे का ख़याल करते हुवे येह बात भी मलह़ूज़े ख़ात़िर रहनी चाहिये कि अगर मेहमान कोई नेक परहेज़गार या आ़लिमे दीन या पीरो मुर्शिद हों, तो उन की शानो अ़ज़मत के मुत़ाबिक़ उन की मेहमान नवाज़ी की जाए। अगर मज़्हबी शख़्सिय्यत को किसी तक़रीब में बुलाना हो तो सोच समझ कर दा'वत दी जाए कि येह दा'वत उन की शान के लाइक़ भी है या नहीं, मसलन : शादी वग़ैरा की तक़रीब में नाच गाना, औ़रतों का बे पर्दा फिरना अगर्चे सब के लिये ह़राम ही है मगर एक आ़लिमे दीन या मज़्हबी शख़्स को दा'वत देना, उस के मर्तबे की तौहीन है। इस लिये हमें चाहिये कि मेहमान नवाज़ी के मरातिब के मुत़ाबिक़ उन की तकरीम में कोताही न करें और हर मुसलमान के साथ ह़ुस्ने सुलूक से पेश आएं क्यूंकि ह़ुस्ने सूलूक की बरकत

www.dawateislami.net

से जहां आपस की मह़ब्बतों के चराग़ रोशन होते हैं, वहीं सुन्नत पर अ़मल के साथ साथ दोनों जहानों की भलाइयां भी नसीब होती हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सह़ाबिय्यात का इत़ाअ़त का मुक़द्दस जज़्बा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! एक मुसलमान को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हर हर हुक्म की ता'मील करनी चाहिये और अपने हर अ़मल में आप की इत्तिबाअ़ को पेशे नज़र रखना चाहिये । हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان चूंकि मह़ब्बते मुस्त़फ़ा के आ'ला मरातिब पर फ़ाइज़ थे । जभी उन का हर अ़मल सुन्नते मुस्त़फ़ा के मुत़ाबिक़ हुवा करता और वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने अक़्दस से निकले हुवे फ़रमान पर लाज़िमी अ़मल करते । मन्क़ूल है कि एक बार शहनशाहे मदीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद से बाहर तशरीफ़ लाए तो देखा कि रास्ते में मर्द व औ़रतें मिल जुल कर चल रहे हैं । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने औ़रतों से मुख़ात़ब हो कर फ़रमाया : اِسْتَاْخِرْنَ فَاِنَّهٗ لَيْسَ لَكُنَّ اَنْ تَحْقُقْنَ الطَّرِيْقَ عَلَيْكُنَّ بِحَافَّاتِ الطَّرِيْقِ ''या'नी पीछे रहो ! तुम रास्ते के दरमियान से नहीं गुज़र सकतीं, बल्कि एक त़रफ़ हो कर चला करो ।'' इस के बा'द येह ह़ाल हो गया कि औ़रतें इस क़दर गली के किनारे से चलती थीं कि उन के कपड़े दीवारों से उलझ जाया करते थे ।

(سنن ابی داود، باب فی مشی النساء مع الرجال فی الطریق، الحدیث: ۵۲۷۲، ج۴، ص۴۷۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा वाक़िए़ में हमारे लिये बेहतरीन दर्स मौजूद है कि उन सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ को नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सिर्फ़ एक बार फ़रमाया ''पीछे रहो ! तुम रास्ते के दरमियान से नहीं गुज़र सकतीं'' तो उन्हों ने इस हुक्म की ऐसी ता'मील की, कि दीवारों से लग कर चलने से उन के कपड़े अटक जाया करते थे । शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद

www.dawateislami.net

इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़ी ज़माना मुसलमानों में पाई जाने वाली बे ह़याई पर अफ़्सोस का इज़हार करते हुवे फ़रमाते हैं : आज कल अक्सर मुसलमान औ़रतों ने मर्दों के शाना ब शाना चलने की नापाक धुन में ह़या की चादर उतार फेंकी है और अब दीदह ज़ेब साड़ियों, नीम उ़रयां ग़रारों, मर्दाना वज़्अ़ के लिबासों, मर्द जैसे बालों के साथ शादी हॉलों, होटलों, तफ़रीह़ गाहों और सिनेमा घरों में अपनी आख़िरत बरबाद करने में मश्ग़ूल हैं। आज का नादान मुसलमान ख़ुद T.V, VCR और INTERNET पर फ़िल्में ड्रामें चला कर, बे हूदा फ़िल्मी गीत गुनगुना कर, शादियों में नाच रंग की मह़फ़िलें जमा कर, ग़ैर मुस्लिमों की नक़्क़ाली में مَعَاذَاللہ दाढ़ी मुन्डा कर, बे शर्माना लिबास बदन पर चढ़ा कर, स्कूटर के पीछे बे पर्दा बेगम को बिठा कर, मेक अप करवा कर मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाह में ले जा कर ख़ुद अपने हाथों अपने लिये जहन्नम में जाने के आ'माल कर रहा है। ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : औ़रतें घर के अन्दर चलने फिरने में भी पाउं इस क़दर आहिस्ता रखें कि उन के ज़ेवर की झंकार न सुनी जाए, इसी लिये चाहिये कि औ़रतें बाजेदार झांझन न पहनें।

ह़दीस शरीफ़ में है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस क़ौम की दुआ़ नहीं क़बूल फ़रमाता, जिन की औ़रतें झांझन पहनती हों। (تفسیرات احمدیہ ص۵۲۵) इस से समझना चाहिये कि जब ज़ेवर की आवाज़ अ़दमे क़बूले दुआ़ (या'नी दुआ़ क़बूल न होने) का सबब है तो ख़ास औ़रत की (अपनी) आवाज़ (का बिला इजाज़ते शरई ग़ैर मर्दों तक पहुंचना) और उस की बे पर्दगी कैसी मूजिबे ग़ज़बे इलाही होगी, पर्दे की त़रफ़ से बे परवाई, तबाही का सबब है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 656, पर्दे के बारे में सुवाल जवाब : 4)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन बे पर्दगी तबाही व बरबादी का सबबे अ़ज़ीम है। मगर अफ़्सोस ! कि हमें इस की कोई परवा नहीं। ख़ुदारा ! अपनी आख़िरत की फ़िक्र कीजिये ! और अपनी औ़रतों

www.dawateislami.net

और मह़ारिम को पर्दे की तरग़ीब दीजिये ! जो लोग बा वुजूदे कुदरत अपनी औ़रतों और मह़ारिम को बे पर्दगी से मन्अ़ न करें वोह "दय्यूस" हैं । रह़मते आ़लमिय्यान, सुल्त़ाने दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : तीन शख़्स कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे, दय्यूस, मर्दानी वज़्अ़ बनाने वाली औ़रत और शराब नोशी का आ़दी । (مجمع الزّوائد ج۴ص۵۹۹حدیث۷۷۲۲)

ह़दीसे पाक में मौजूद लफ़्ज़ दय्यूस के बारे में ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन ह़स्कफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "दय्यूस" वोह शख़्स होता है जो अपनी बीवी या किसी मह़रम पर ग़ैरत न खाए । (دُرِّمُختار ج۶ص۱۱۳) इस लिये मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त कीजिये ! ख़ुद भी बद निगाही से बचिये और अपने घर वालों को भी पर्दे की तल्क़ीन कीजिये ! घर में शरई पर्दा राइज करने का एक त़रीक़ा येह भी है कि अपने घर वालों को दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता कीजिये ! उन्हें अपने अ़लाक़े में होने वाले दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में भेजा करें ।

मद्रसतुल मदीना लिल बनात में क़ारिया इस्लामी बहनें मदनी मुन्नियों को फ़ी सबीलिल्लाह कुरआने पाक ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम देती हैं । **मद्रसतुल मदीना बालिग़ात** में बड़ी उ़म्र की इस्लामी बहनों को इस्लामी बहनें घरों में इजतिमाई त़ौर पर फ़ी सबीलिल्लाह कुरआन पढ़ातीं, नमाज़, दुआ़एं और उन के मख़्सूस मसाइल वग़ैरा सिखाती हैं । **मद्रसतुल मदीना लिल बनात ऑन लाइन** में इस्लामी बहनें, इस्लामी बहनों को ब ज़रीअ़ए इन्टरनेट दुरुस्त अदाएगी के साथ कुरआने करीम पढ़ाती और उन की सुन्नत के मुत़ाबिक़ तर्बिय्यत करती हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कमो बेश 72 मुमालिक में त़लबा व त़ालिबात इन्टरनेट के ज़रीए कुरआने करीम की ता'लीम ह़ासिल कर रहे हैं ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना बालिग़ान व बालिग़ात में 12 हज़ार से ज़ाइद त़लबा व त़ालिबात हैं ।

www.dawateislami.net

येही है आरज़ू ता'लीमे कुरआं आ़म हो जाए
तिलावत करना सुब्हो शाम मेरा काम हो जाए

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लामी भाई ख़ुद भी हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ और हफ़्तावार इजतिमाई त़ौर पर देखे जाने वाले मदनी मुज़ाकरे में अव्वल ता आख़िर शिर्कत फ़रमाया करें। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से ख़ुद ही इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा करने, गुनाहों से बचने और शरीअ़त के अह़कामात पर अ़मल करने का ज़ेह्न बनेगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शादी कर लो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में इत़ाअ़ते रसूल का ऐसा जज़्बा था कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हर हुक्म पर आंखें बन्द कर लिया करते थे, ह़ज़रते रबीआ़ अस्लमी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत गुज़ारी का शरफ़ ह़ासिल था, एक दिन नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ रबीआ़ ! तुम शादी क्यूं नहीं कर लेते ? मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं शादी नहीं करना चाहता, क्यूंकि एक तो मेरे पास इतना मालो अस्बाब नहीं कि एक औ़रत की ज़रूरियात पूरी कर सकूं और दूसरा येह कि मुझे येह बात पसन्द नहीं कि कोई चीज़ मुझे आप से दूर कर दे। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से ए'राज़ फ़रमाया और मैं ख़िदमत करता रहा। कुछ अ़र्से बा'द आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर इरशाद फ़रमाया : रबीआ़ तुम शादी क्यूं नहीं कर लेते ? मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं शादी नहीं करना चाहता, क्यूंकि एक तो मेरे पास इतना मालो अस्बाब नहीं कि एक औ़रत की ज़रूरियात पूरी कर सकूं और दूसरा येह कि मुझे येह बात पसन्द नहीं कि कोई चीज़ मुझे आप से दूर कर दे, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से ए'राज़ फ़रमाया, लेकिन फिर मैं ने सोचा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ से ज़ियादा जानते हैं कि दुन्या व

www.dawateislami.net

आख़िरत में मेरे लिये क्या चीज़ बेहतर है ? अगर अब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया तो कह दूंगा ठीक है, या रसूलल्लाह आप मुझे जो चाहें हुक्म दें। चुनान्चे, जब तीसरी बार आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि रबीआ़ शादी क्यूं नहीं कर लेते ? तो मैं ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं ! फिर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अन्सार के एक क़बीले का नाम ले कर फ़रमाया, उन के पास चले जाओ और उन से कहना ! मुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भेजा है कि फ़ुलां औ़रत से मेरी शादी कर दें। चुनान्चे, मैं उन के पास गया और सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम सुनाया तो उन लोगों ने बड़े पुर तपाक त़रीक़े से मेरा इस्तिक़्बाल किया और कहने लगे, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ासिद अपना काम किये बिग़ैर नहीं लौटना चाहिये। फिर उन्हों ने उस औ़रत से मेरा निकाह़ कर दिया और ख़ूब शफ़्क़तो मेहरबानी से पेश आए और कोई दलील भी त़लब नहीं की।

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ربیعۃ بن کعب الاسلمی رضی اللہ عنہ، حدیث: ۱۶۵۷۷، ج۵، ص۵۶۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में इत्आ़ते रसूल का कैसा जज़्बा हुवा करता था कि शादी जैसे नाज़ुक मुआ़मले में भी कोई दलील त़लब किये बिग़ैर सिर्फ़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पैग़ाम को सुनते ही अपनी लड़की की शादी, ह़ज़रते रबीआ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से कर दी। इस वाक़िए़ से येह दर्स मिला कि हम जिस से अपने बच्चों की शादी करें, अगर्चे ग़रीब हो, लेकिन नमाज़, रोज़ा, सुन्नतों पर अ़मल और तक़्वा व परहेज़गारी जैसी सिफ़ात का ह़ामिल ज़रूर होना चाहिये। मगर अफ़्सोस ! हमारे मुआ़शरे में सिर्फ़ हुस्नो जमाल और मालो मनाल और दुन्यवी जाहो जलाल देख कर शादी कर दी जाती है और ऐसी शादी बारहा ख़ाना बरबादी का बाइ़स बनती है। लिहाज़ा शादी में सीरतो किरदार पर ख़ुसूसी नज़र रखनी चाहिये चुनान्चे,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिस ने किसी औ़रत से उस की इ़ज़्ज़त की वज्ह से निकाह़ किया, तो **अल्लाह** तआ़ला उस की ज़िल्लत

www.dawateislami.net

को बढ़ाएगा, जिस ने औ़रत के मालो दौलत (की लालच) की वज्ह से निकाह़ किया, **अल्लाह** तआ़ला उस की ग़ुर्बत में इज़ाफ़ा करेगा, जिस ने औ़रत के ह़सब-नसब (या'नी ख़ानदानी बड़ाई) की बिना पे निकाह़ किया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के घटियापन को बढ़ाएगा और जिस ने सिर्फ़ और सिर्फ़ इस लिये निकाह़ किया कि अपनी नज़र की ह़िफ़ाज़त करे, अपनी शर्मगाह को मह़फ़ूज़ रखे, या सिलए रेह़मी (या'नी रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक) करे, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये औ़रत में बरकत देगा और औ़रत के लिये मर्द में बरकत देगा। (المعجم الاوسط: الحدیث ۲۳۴۲، ج۲، ص۱۸)

लिहाज़ा हमें भी मालो दौलत पाने और दुन्यावी फ़वाइद ह़ासिल करने के बजाए दीनदारी और परहेज़गारी को पेशे नज़र रखते हुवे दीनी ए'तिबार से अच्छे लोगों में शादी करनी चाहिये और अपनी दुन्या व आख़िरत बेहतर बनाने के लिये तमाम मुआ़मलात में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त करनी चाहिये, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी का दर्स देते हुवे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने ज़मानए जाहिलिय्यत की वोह तमाम फ़ुज़ूल रस्में ख़त्म फ़रमा दीं, जिन पर अ़र्सए दराज़ से अ़मल जारी था।

काश ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सदक़े में मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह, मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा, का'बे के बदरुद्दुजा, त़ैबा के शम्सुद्दुह़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त का जज़्बा नसीब हो जाए, ज़बानी जम्ए़ ख़र्च से निकल कर काश ! हम अ़मली त़ौर पर सच्चे, सुच्चे आ़शिक़े रसूल बन जाएं,

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :

याद रखना सभी छोड़ना मत कभी दामने मुस्त़फ़ा आ़शिक़ाने रसूल
रह़मते किब्रिया तुम पे हो दाइमा है हमारी दुआ़ आ़शिक़ाने रसूल
तुम पे फ़ज़्ले ख़ुदा, रह़मते मुस्त़फ़ा हो बरोज़े जज़ा आ़शिक़ाने रसूल
काश ! दुन्या में तुम दो ब फ़ज़्ले ख़ुदा दीं का डंका बजा आ़शिक़ाने रसूल
तुम पे हो क़ब्र में हर जगह ह़श्र में सायए मुस्त़फ़ा आ़शिक़ाने रसूल

www.dawateislami.net

आ़शिक़े रसूल को दुआ़ओं से नवाज़ने के बा'द अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तम्बीह करते हुवे फ़रमाते हैं :

बे नमाज़ी रहें कुछ न रोज़े रखें उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
आ़लिमों पर हंसे, फबतियां भी कसें उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
जो कि गाने सुनें, फ़िल्म बीनी करें उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
बद निगाही करें, बद कलामी करें उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
खाएं रिज़्क़े ह़राम, ऐसे हैं बद लगाम उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
अ़हद तोड़ा करें, झूट बोला करें उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
जो सताते रहें दिल दुखाते रहें उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
चुग़लियों तोह्मतों, में जो मश्ग़ूल हों उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
गालियां जो बकें ऐ़ब भी न ढकें उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
दाढ़ियां जो मुन्डाएं, करें ग़ीबतें उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
काश ! अ़त्तार का त़ैबा में ख़ातिमा हो करो येह दुआ़ आ़शिक़ाने रसूल

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

चौथे रोज़ ही ख़ुश्बू लगा ली

मन्क़ूल है कि दौरे जाहिलिय्यत में किसी के मर जाने पर कई दिनों तक नौह़ा करना, सोग मनाना आ़म मा'मूल था । यहां तक कि इस्लाम से पहले अ़रब में बेवा औ़रत शौहर के इन्तिक़ाल के बा'द एक साल तक बुरे मकान, बुरे लिबास में रहती और तमाम घर वालों से अ़लाह़िदगी इख़्तियार करती थी । (मिरआतुल मनाजीह़, 5/151) और यूं एक साल तक सोग किया करती थी । लेकिन इस्लाम के बा'द ताजदारे अम्बिया, सरवरे हर दोसरा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शोहर के इ़लावा दीगर रिश्तेदारों के (इन्तिक़ाल पर) सोग के लिये तीन दिन मुक़र्रर फ़रमाए । (सह़ाबए किराम का इ़श्क़े रसूल : 230) जब कि बीवी अपने शोहर की वफ़ात पर इ़द्दत की मुद्दत (चार महीने दस दिन) तक सोग में रहेगी अलबत्ता किसी क़रीबी (रिश्तेदार) के मर जाने पर औ़रत को तीन दिन सोग करने की इजाज़त है इस से ज़ाइद की (इजाज़त) नहीं ।

(ردالمحتار، کتاب الطلاق، فصل فی الحداد، ج۵، ص۲۲۳)

www.dawateislami.net

तीन दिन से ज़ियादा सोग मनाने की येह रस्म ज़मानए जाहिलिय्यत में अगर्चे त़वील अ़र्से से राइज थी लेकिन जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस से मन्अ़ फ़रमा दिया, तो सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ का इस पर अ़मल करना मिसाली था। चुनान्चे, जब ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के भाई का इन्तिक़ाल हो गया, तो चौथे दिन उन्हों ने ख़ुश्बू लगाई और कहा कि मुझ को ख़ुश्बू की ज़रूरत न थी, लेकिन मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मिम्बर पर सुना है कि किसी मुसलमान औ़रत को शोहर के सिवा तीन दिन से ज़ियादा किसी का सोग जाइज़ नहीं, इस लिये येह उसी हुक्म की ता'मील थी।

(سنن ابی داود، کتاب الطلاق، باب احداد المتوفی عنها زوجها، الحدیث: ۲۲۹۹، ج۲، ص۴۲۲)

इसी त़रह़ जब ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के वालिद का इन्तिक़ाल हुवा तो उन्हों ने तीन रोज़ के बा'द अपने रुख़्सारों पर ख़ुश्बू मली और कहा ! मुझे इस की ज़रूरत न थी, सिर्फ़ उस हुक्म की ता'मील मक़्सूद थी। (سنن ابی داود، کتاب الطلاق، باب احداد المتوفی عنها زوجها، الحدیث: ۲۲۹۹، ج۲، ص۴۲۲)

सोग मनाना कैसा है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से जहां येह मा'लूम हुवा कि सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ इत़ाअ़ते रसूल के जज़्बे से सरशार और दिलो जां से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त गुज़ार थीं, वहीं येह भी मा'लूम हुवा कि इस्लाम में सोग की मुद्दत तीन दिन है, मगर जिस औ़रत का शोहर फ़ौत हो जाए तो वोह चार माह दस दिन तक सोग में रहेगी। उ़मूमन देखा जाता है कि आज अगर किसी घर में मय्यित हो जाए तो अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! इ़ल्मे दीन से दूरी के सबब बहुत से ग़ैर शरई कामों का इर्तिकाब किया जाता है, जैसे नौह़ा या'नी मय्यित के अवसाफ़ (या'नी ख़ूबियां) मुबालग़े के साथ (ख़ूब बढ़ा चढ़ा कर) बयान कर के आवाज़ से रोना जिस को बैन (भी) कहते हैं, बिल इज्माअ़ ह़राम है। यूहीं वावेला, वामुसीबता (या'नी हाए मुसीबत) कह कर चिल्लाना, गरेबान फाड़ना,

www.dawateislami.net

मुंह नोचना, बाल खोलना, सर पर ख़ाक डालना, सीना कूटना, रान पर हाथ मारना येह सब जाहिलिय्यत के काम हैं और ह़राम (हैं इसी त़रह़) आवाज़ से रोना मन्अ़ है । (बहारे शरीअ़त, 1/854, 855 कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, 496) ह़ालांकि ऐसी सूरत में सब्र से काम लेना चाहिये और इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आज़माइश समझ कर इस पर राज़ी रहना चाहिये । मगर अफ़्सोस ! घर वाले और आस पड़ोस के लोग बिल ख़ुसूस ख़वातीन ज़ोर ज़ोर से रोती चिल्लाती हैं । अगर कोई सब्रो ज़ब्त़ से काम लेते हुवे उन का साथ न दे तो उस पर त़ा'नो तश्नीअ़ के तीर बरसाते हुवे इस त़रह़ की गुफ़्तगू की जाती है कि इस को देखो कैसी सख़्त दिल है ! "जवान" मय्यित पर भी आंखों में एक आंसू नहीं आया ! यूं एक मुसलमान के बारे में बद गुमानी और उस की दिल आज़ारी का गुनाह भी सर लेती हैं ।

याद रखिये ! ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत वफ़ात पर ग़मगीन हो जाना, चेहरे से ग़म का ज़ाहिर होना, इसी त़रह़ बिला आवाज़ रोना वग़ैरा मन्अ़ नहीं है । हां ! ऐसे में शरीअ़ते मुत़ह्हरा की ख़िलाफ़ वर्ज़ी मन्अ़ है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी शरीअ़त की पासदारी करते हुवे अपनी आख़िरत बेहतर बनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

किन कामों में इत़ाअ़त लाज़िम है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुक्म मानना **इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा** कहलाता है । इत़ाअ़त में हर वोह काम शामिल है, जिन से बचने का हुक्म है और वोह काम भी दाख़िल हैं जिन्हें करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया है । जिस त़रह़ नमाज़ पढ़ना, ज़कात देना, रोज़ा रखना और दीगर नेक काम ज़रूरी हैं, इसी त़रह़ झूट, ग़ीबत, चुग़ली, मूसीक़ी वग़ैरा गुनाहों से इजतिनाब भी लाज़िम है । मगर अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! आज मुसलमानों ने दीन से दूरी के बाइस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और

www.dawateislami.net

उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी को छोड़ दिया, शायद इसी वज्ह से मुआ़शरे में गुनाह आ़म होते जा रहे हैं। जिस त़रफ़ नज़र उठाइये बे अ़मली, बे राहरवी और सुन्नतों की ख़िलाफ़ वर्ज़ी के दिल सोज़ नज़ारे हैं। नमाज़ें छोड़ना, गालियां देना, तोहमतें लगाना, बद गुमानियां करना, ग़ीबतें करना, लोगों के ऐ़ब जानने की जुस्त्जू में रहना, मा'लूम होने पर उन के ऐ़बों को उछालना, बात बात पे झूट बोलना, झूटे वा'दे करना, किसी का माल ना ह़क़ खाना, फ़िल्में ड्रामे, गाने बाजों के नशे में मख़्मूर रहना, सरे आ़म सूद व रिश्वत का लैन दैन करना, मां बाप की ना फ़रमानी करना, गुरूरो तकब्बुर, ह़सदो रियाकारी और बुग़्ज़ो कीना जैसे बे शुमार गुनाह आ़म हैं। याद रखिये ! एक दिन मौत हमारा रिश्तए ह़याते मुन्क़त़ेअ़ कर के (या'नी काट कर) हमारे आरास्ता व पैरास्ता कमरों के नर्म व आराम देह गदेलों से उठा कर क़ब्र की मिट्टी पर सुला देगी, फिर पछताने से कुछ हाथ न आएगा। लिहाज़ा इन साआ़तों को ग़नीमत जानते हुवे गुनाहों से सच्ची तौबा कीजिये ! और नेकियों में वक़्त गुज़ारिये। आइये ! इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा का जज़्बा पैदा करने की सच्ची निय्यत से चन्द फ़रामीने मुस्त़फ़ा सुनते हैं :

फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल फ़रामीने मुस्त़फ़ा

1. **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा काम, नमाज़ को उस के वक़्त पर अदा करना और वालिदैन से नेकी करना है।

(الجامع الصغیر: ۱/۱۸، حدیث: ۱۹۶)

2. **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक फ़राइज़ के बा'द सब से ज़ियादा पसन्दीदा काम किसी इस्लामी भाई के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना है।

(الجامع الصغیر: ۱/۱۹، حدیث: ۲۰۰)

3. **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से पसन्दीदा घर वोह है, जिस में यतीम को इ़ज़्ज़त दी जाती हो। (الجامع الصغیر: ۱/۲۰، حدیث: ۲۱۹)

4. कोई अपने मुसलमान भाई को इस से ज़ियादा अफ़्ज़ल फ़ाइदा नहीं दे सकता कि उसे कोई अच्छी बात पहुंचे तो वोह अपने भाई को पहुंचा दे। (جامع بیان العلم و فضلہ، باب دعاء رسول اللہ لمستمع العلم و حافظہ و مبلغہ، الحدیث: ۱۸۵، ص ۶۲)

www.dawateislami.net

5. अच्छी बात के इ़लावा अपनी ज़बान को रोके रखो, इस त़रह़ तुम शैत़ान पर ग़ालिब आ जाओगे ।

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب وغیرہ، باب الترغیب فی الصمت...الخ، رقم ۲۹، ج۳، ص ۳۴۱)

6. मोमिनों में कामिल तरीन शख़्स वोह है, जो उन में ज़ियादा अच्छे अख़्लाक़ वाला है और तुम में से बेहतरीन शख़्स वोह है जो अपने अहले ख़ाना के मुआ़मले में बेहतर हो ।

(جامع ترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی استکمال الایمان وزیادتہ ونقصانہ، رقم ۲۶۲۱، ج۴، ص ۲۷۸)

7. जो अपने किसी भाई के किसी ऐ़ब को देख ले और उस की पर्दापोशी करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस पर्दापोशी की वज्ह से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा । (المعجم الکبیر مسند عُقْبَہ بن عامر، رقم ۷۹۵، ج۱۷، ص ۲۸۸)

8. जिस के माल या जान में मुसीबत आई, फिर उस ने उसे पोशीदा रखा और लोगों पर ज़ाहिर न किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दे । (المعجم الاوسط للطبرانی، ج۱، ص ۲۱۴، حدیث: ۷۳۷)

वईदों पर मुश्तमिल फ़रामीने मुस्त़फ़ा

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिन गुनाहों की मज़म्मत बयान फ़रमाई और बचने का हुक्म दिया, उन से भी बचना इत़ाअ़ते रसूल है, आइये ! इस ज़िम्न में भी चन्द फ़रामीने मुस्त़फ़ा सुनते हैं :

1. दो शख़्स ऐसे हैं जिन की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा, क़त़्एु रेह़्मी करने वाला और बुरा पड़ोसी ।

(الجامع الصغیر: ۱/۱۷، حدیث: ۱۶۲)

2. ज़ुल्म से बचो ! इस लिये कि वोह क़ियामत के अन्धेरों में से है ।

(الجامع الصغیر: ۱/۱۵، حدیث: ۱۳۶)

3. फ़ुह़ुश गोई सख़्त दिली से है और सख़्त दिली आग में है ।

(سُنَنُ التِّرْمِذِیّ ج۳ ص۴۰۶ حدیث ۲۰۱۶)

4. बुग़्ज़ रखने वालों से बचो, क्यूंकि बुग़्ज़ दीन को मुन्ड देता (या'नी तबाह कर देता) है । (کنز العمال، الحدیث: ۵۴۸۶، ج۳، الجزء الثالث، ص۲۸)

www.dawateislami.net

5. जो मुसलमान अ़ह्द शिकनी और वा'दा खि़लाफ़ी करे, उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और फ़िरिश्तों और तमाम इन्सानों की ला'नत है और उस का न कोई फ़र्ज़ क़बूल होगा न नफ़्ल।

(صحیح البخاری، کتاب الجزیۃ والموادعۃ، باب اثم من عاھد ثم غدر، الحدیث ۳۱۷۹، ج۲، ص۳۷۰)

6. जो किसी मोमिन को ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचाए या उस के साथ मक्र और धोकेबाज़ी करे वोह मलऊ़न है।

(سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الخیانۃ والغش، الحدیث:۱۹۴۸، ج۳، ص۳۷۸)

7. जो अपने किसी मुसलमान भाई को उस के किसी ऐसे गुनाह पर आ़र दिलाएगा, जिस से वोह तौबा कर चुका हो तो, आ़र दिलाने वाला उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक कि वोह खु़द उस गुनाह को न कर ले।

(احیاء علوم الدین، کتاب آفات اللسان، الآفۃ الحادی ۃ عشر السخریۃ والاستھزاء، ج۳، ص۱۶۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम भी बयान कर्दा फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर अ़मल करने में कामयाब हो जाएं तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारी ज़िन्दगी में भी नेकियों की मदनी बहार आ जाएगी और गुनाहों भरी ज़िन्दगी से छुटकारा मिल जाएगा। आइये ! हम भी पांचों नमाज़े बा जमाअ़त पढ़ने, वालिदैन और तमाम मुसलमानों से हुस्ने सुलूक करने, मुसलमानों की दिल आज़ारी से बचने, उन का दिल खु़श करने, यतीमों पर शफ़्क़त और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त, अहलो इ़याल की मदनी तर्बिय्यत करने, मुसलमानों को अच्छी बातें बताने, उन की पर्दा पोशी करने, मुसीबत पर सब्र करने, ज़ुल्मो ज़ियादती, फ़ुह़्श गोई, बुग़्ज़ो कीना, वा'दा खि़लाफ़ी, धोका देही वगै़रा गुनाहों से बचने की खु़द भी निय्यत करते हैं और दूसरे को भी बचाएंगे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस के इ़लावा दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **''जन्नत में ले जाने वाले आ'माल''** और **''जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल''** का मुत़ालआ़ कीजिये और नेकियों में रग़बत और इस्तिक़ामत पाने के लिये हर माह तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र और मदनी इन्आ़मात पुर भी कीजिये।

www.dawateislami.net

मजलिसे मदनी इन्आ़मात का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़्वाहिशात के ऐन मुत़ाबिक़ इस्लामी भाइयों, इस्लामी बहनों और जामिआ़तुल मदीना व मदारिसुल मदीना के त़लबा व त़ालिबात को बा अ़मल बनाने के लिये, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की तरग़ीब दिलाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त मजलिसे मदनी इन्आ़मात का क़ियाम अ़मल में आया । आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : काश ! दीगर फ़राइज़ो सुनन की बजा आवरी के साथ साथ तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इन मदनी इन्आ़मात को भी अपनी ज़िन्दगी का दस्तूरुल अ़मल बना लें और तमाम ज़िम्मादाराने दा'वते इस्लामी भी अपने अपने ह़ल्क़े में इन (मदनी इन्आ़मात के रसाइल) को आ़म कर दें और हर मुसलमान अपनी क़ब्रो आख़िरत की बेहतरी के लिये इन मदनी इन्आ़मात को इख़्लास के साथ अपना कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से जन्नतुल फ़िरदौस में मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोसी बनने का अ़ज़ीम तरीन इन्आ़म पा ले ।''

आप की ख़्वाहिश के पेशे नज़र मजलिसे मदनी इन्आ़मात के तमाम ज़िम्मेदारान को ताकीद की जाती है कि ज़ैली ह़ल्क़ा, ह़ल्क़ा, अ़लाक़ा, डिवीज़न और काबीना सत़ह़ के तमाम ज़िम्मेदारान व दीगर इस्लामी भाइयों के हमराह ज़ैली ह़ल्क़ों का जदवल बनाएं । इस्लामी भाइयों के पास जा जा कर इनफ़िरादी कोशिश कर के मदनी इन्आ़मात का रिसाला पेश करते हुवे, इस पर अ़मल करने का ज़ेह्न बनाएं, फ़िक्रे मदीना करने का त़रीक़ा समझाएं, तय्यार हो जाने वालों के नाम लिखे, ज़ैली ज़िम्मादार के पास ज़ैली, ह़ल्क़ा ज़िम्मेदार के पास ह़ल्क़ा और अ़लाक़ा / शहर ज़िम्मेदार के पास अ़लाक़ा / शहर के (ज़िम्मेदारान व अहले मह़ब्बत) इस्लामी भाइयों की फ़ेहरिस्त मौजूद हो, येह तमाम ज़िम्मेदारान, उन इस्लामी भाइयों से राबित़ा रखें फिर उन्हें फ़िक्रे मदीना करने की याद देहानी भी करवाते रहें ।

www.dawateislami.net

आइये ! हम भी नेकी के कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लें और मदनी इन्आ़मात पर न सिर्फ़ ख़ुद अ़मल करें बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों को इस की तरग़ीब दिला कर ढेरों सवाब कमाएं !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने **इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा** के मुतअ़ल्लिक़ बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल की

- यक़ीनन एक मुसलमान के लिये दीनो दुन्या की भलाइयां पाने का बेहतरीन नुस्ख़ा **इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा** ही है ।
- अपने तमाम तर मुआ़मलात को **इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा** के सांचे में ढालने वाला ही दुन्या व आख़िरत में कामयाब है ।
- सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का मुक़द्दस किरदार भी हमारे लिये मश्अ़ले राह है कि उन ह़ज़रात ने भी अपनी सारी ज़िन्दगी नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त में बसर की और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिस काम का हुक्म न भी दिया, फिर भी उन नुफ़ूसे क़ुदसिया ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हर अदा को लाज़िमुल अ़मल जानते हुवे उस पर अ़मल किया ।
- **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपना और अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुत़ीओ फ़रमां बरदार बनाए और हर बुरे काम से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

12 मदनी कामों में से हफ़्तावार एक मदनी काम “हफ़्तावार इजतिमाअ़”

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर नेकियां करने और नेकी की दा'वत को आ़म करने के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लीजिये । ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर

www.dawateislami.net

शिर्कत भी है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्मे दीन से माला माल ऐसे इजतिमाअ़ में शिर्कत की बड़ी बरकतें हैं । इल्मे दीन की मह़फ़िल में शिर्कत का सवाब मिलता है और इल्मे दीन सीखने की फ़ज़ीलत के बारे में ह़दीसे पाक में है कि :

जो शख़्स इल्म की त़लब में किसी रास्ते को चले, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को जन्नत के रास्ते पर ले जाता है और त़ालिबे इल्म की ख़ुशनूदी के लिये फ़िरिश्ते अपने बाज़ू बिछा देते हैं ।

(سنن الترمذی"، کتاب العلم، باب ماجاء في فضل الفقه علی العبادة، الحدیث: ۲۶۹۱، ج۴، ص۳۱۲.)

आइये ! हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं ।

पंजाब (पाकिस्तान) के शहर चिश्तियां शरीफ़ के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : नमाज़ों से जी चुराना, दाढ़ी मुन्डाना, वालिदैन को सताना वग़ैरा वग़ैरा गुनाह, मेरी ज़िन्दगी का हिस्सा बन चुके थे, गाने बाजे सुनने का तो मुझे जुनून (या'नी पागल पन) की ह़द तक शौक़ था, त़रह़ त़रह़ के गाने मेरे मोबाइल फ़ोन और कम्प्यूटर में हर वक़्त मौजूद रहते । इन्टरनेट के ग़लत़ इस्ति'माल के गुनाह में भी मुलव्वस था । जीन्स (JEANS) के सिवा किसी और कपड़े की पतलून न पहनता, ह़त्ता कि एक मरतबा ईद के मौक़अ़ पर मेरे लिये वालिद साह़िब ने सूट सिलवा लिया, लेकिन मैं ने उसे पहनने से इन्कार कर दिया और नफ़्स की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ पेन्ट-शर्ट ख़रीद कर ईद के पुर मसर्रत मौक़अ़ पर इसी लिबास में मल्बूस हुवा । फ़ेशन का दिल दादह होने की वज्ह से मैं ने इमामा और कुर्ते पाजामे के बारे में तो कभी सोचा भी न था । मेरे सुधरने के अस्बाब कुछ यूं हुवे कि हमारी मस्जिद में जो नए इमाम साह़िब तशरीफ़ लाए, वोह ख़ुश क़िस्मती से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ''दा'वते इस्लामी'' के मदनी माह़ोल से वाबस्ता थे । एक दिन उन्हों ने मुझ पर ''इनफ़िरादी कोशिश'' करते हुवे हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की रग़बत दिलाई, उन की ''इनफ़िरादी कोशिश'' के सबब मैं ने दो एक बार हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत कर ही ली । एक दिन उन्हों ने मेरे वालिद साह़िब को

www.dawateislami.net

''दा'वते इस्लामी'' के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयान की केसिट **''मुर्दे की बे बसी''** तोह़्फ़तन दी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से एक रात मुझे येह केसिट सुनने की सआ़दत ह़ासिल हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस बयान की बरकत से मेरे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर होने लगी, ख़ास कर इस जुम्ले ''इन्सान को मरने के बा'द अन्धेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा, गाड़ी हुई तो वोह भी गेरज में खड़ी रह जाएगी।'' ने मेरे दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने हाथों हाथ अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली, अपना मोबाइल और कम्प्यूटर भी गानों की नुहूसतों से पाक कर दिया और ''दा'वते इस्लामी'' के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया। इस ''मदनी माह़ोल'' ने मुझे यक्सर बदल कर रख दिया, मैं ने अपने चेहरे पर प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी दाढ़ी मुबारक और सर पर इमामा शरीफ़ का ताज सजा लिया और सुन्नत के मुत़ाबिक़ मदनी लिबास ज़ेबे तन कर लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर मैं यूनीवर्सिटी के होस्टेल में दा'वते इस्लामी के शो'बए ता'लीम के ज़िम्मेदार की ह़ैसिय्यत से मदनी कामों की धूमें मचाने की कोशिश में मसरूफ़ हूं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ الصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

www.dawateislami.net

‘इस्मिद’ के चार हुरूफ़ की निस्बत से सुरमा लगाने के चार मदनी फूल

सुनने इब्ने माजा की रिवायत में है : ‘‘तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा **‘इस्मिद’** (اِثـ۔مِد)है कि येह निगाह को रोशन करता और पलकें उगाता है।’’

《2》 पथ्थर का सुरमा इस्ति’माल करने में ह़रज नहीं और सियाह सुरमा या काजल ब क़स्दे ज़ीनत (या’नी ज़ीनत की निय्यत से) मर्द को लगाना मकरूह है और ज़ीनत मक़्सूद न हो तो कराहत नहीं। (فتاوٰی عالمگیری ج۵ ص۳۵۹)

《3》 सुरमा सोते वक़्त इस्ति’माल करना सुन्नत है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 180)

《4》 सुरमा इस्ति’माल करने के तीन मन्क़ूल त़रीक़ों का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है :

(1) कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां

(2) कभी दाईं (सीधी) आंख में तीन और बाईं (उल्टी) में दो,

(3) तो कभी दोनों आंखों में दो–दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुरमे वाली कर के उसी को बारी–बारी दोनों आंखों में लगाइये। (شُعَبُ الْاِیمان، ج۵ ص۲۱۸۔۲۱۹)

इस त़रह़ करने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ तीनों पर अ़मल होता रहेगा। याद रखिये ! तकरीम के जितने भी काम होते सब हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सीधी जानिब से शुरूअ़ किया करते, लिहाज़ा पहले सीधी आंख में सुरमा लगाइये फिर बाईं आंख में।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब **‘‘सुन्नतें और आदाब’’** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा’वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

रहूं हर दम मुसाफ़िर काश ‘‘मदनी क़ाफ़िलों’’ का मैं
करम हो जाए मौला गर ! इनायत येह बड़ी होगी

(वसाइले बख़्शिश स. 393)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 7 दुरूदे पाक और 1 दुआ़

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़् कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَيضاً ص ٦٥)

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ٢٧٧)

﴾4﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

《5》 छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْکِ اللّٰہِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

《6》 कुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया। इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है ! ! !** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

《7》 दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَکَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

शाफ़ेए़ उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج۲ص۳۲۹،حدیث ۳۱)

हर रात इबादत में गुज़ारने का आसान नुस्ख़ा

ग़राइबुल क़ुरआन सफ़ह़ा 187 पर एक रिवायत नक़्ल की गई है कि जो शख़्स रात में येह दुआ़ 3 मरतबा पढ़ लेगा तो गोया उस ने शबे क़द्र को पा लिया। लिहाज़ा हर रात इस दुआ़ को पढ़ लेना चाहिये।

दुआ़ येह है :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**)

www.dawateislami.net